5. बौद्ध-धर्मक मतकेँ खंडित कऽ मिथिलामे सनातन धर्मकेँ पुनर्स्थापित करबामे किनकर योगदान रहलनि ?

6. मिथिलामे 'नव्य-न्याय' पद्धतिक जन्मदाता के छलाह ?

7. मिथिलाक विद्यापीठक आचार्य लोकनिक प्रमुख उपाधि कोन-कोन छल ?

8. मिथिलाक कोन-कोन गामक नामकरण ओहिठामक प्रचलित शास्त्रक शिक्षाक आधार पर भेल अछि।

9. विक्रमशिला विश्वविद्यालयक पतनोपरान्त मिथिलाक कोन स्थान विश्वविद्यालयक रूप धारण कयलक?ओहि विषयमे लिखू।

10. मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाक प्रारम्भ करबामे म० लक्ष्मीश्वर सिंहक योगदानक वर्णन करू

◆◆◆

# मिथिलाक शैक्षणिक परम्परा

'शिक्षा' शब्द संस्कृतक 'शिक्ष्' धातुसँ व्युत्पन्न भेल अछि जकर सामान्य अर्थ अछि– सिखब ओ सिखायब । एहि दृष्टिएँ कहल जा सकैछ जे शिक्षामे सिखब-सिखयबाक प्रक्रिया चलैत रहैत अछि ।

शिक्षाक अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'एजूकेशन' अछि जे लैटिन भाषाक 'एजूकेयर' शब्दसँ निकलल मानल जाइछ जकर अर्थ थिक विकसित करब, बढ़ायब, उठायब आदि । एहि दृष्टिएँ सेहो शिक्षा एक प्रक्रियाक रूपमे सोझाँ अबैत अछि जकर द्वारा मनुक्खक व्यक्तित्वक विकास होइत अछि । नेनाक जन्महिसँ ई प्रक्रिया शुरू भऽ जाइछ तथा जीवन भरि अविकल रूपसँ चलैत रहैत अछि । जेन्मसँ मृत्युपर्यन्त धरि हम अनेक वस्तु, संस्था एवं विचारक सम्पर्कमे अबैत छी, प्रतिक्षण नवीन अनुभव प्राप्त करैत छी । एहि अनुभव एवं संस्कारसँ हमर ज्ञानक परिधि तँ व्यापक होइतहि अछि हमर व्यवहार-विचारमे सेहो परिवर्तन होइत अछि । एहि प्रकारेँ कहल जा सकैछ शिक्षा एहन प्रक्रिया थिक जे व्यवस्थित रूपसँ कोनहु शिक्षा-संस्थामे वा शिक्षक, गुरु आदिसँ ज्ञान किंवा विद्याक प्राप्तिक संग-संग चारित्रिक तथा मानसिक शक्तिक विकास धरि चलैत रहैत अछि ।

'शैक्षणिक' शब्दक अर्थ अछि शिक्षा-संबंधी । मिथिलाक शैक्षणिक परम्पराक इतिहास प्राचीन कालहिसँ गौरवपूर्ण रहल अछि । अति प्राचीन कालमे (वैदिक-युगसँ पूर्व) मिथिलामे औपचारिक शैक्षिक-संस्थान नहि छल । घरमे पिता वा पितामह नेना सभकेँ शिक्षा दैत छलथिन । धीरे-धीरे ज्ञान-विज्ञानक प्रगतिक कारणेँ परिवारक बीच शिक्षा-व्यवस्था कठिन होमय लागल तेँ समाज द्वारा प्रख्यात विद्वान्-लोकनिकेँ नियमित शिक्षा देबाक हेतु प्रोत्साहित कयल

गेल। एवं प्रकारेँ समाजक ज्ञानी लोकनि शिक्षण-कार्य प्रारम्भ कयलनि। हुनका लोकनिकेँ गुरु आओर आचार्यक पदवी देल गेल।

ऋग्वैदिक युगक उत्तर कालमे एहि आचार्य लोकनिक आश्रमकेँ गुरुकुल कहल गेल। गुरुकुले ओहि समयक एकमात्र शैक्षिक संस्था छल जतय छात्र सुनियोजित आओर सुव्यवस्थित शिक्षाक प्राप्ति करैत छल।

उपनिषद-कालमे मिथिलामे शिक्षा-प्राप्तिक तीन साधन छल–

**1. गुरुकुल**–जाहिठाम उपनयन संस्कारक पश्चात् 12 वर्ष धरि छात्र-लोकनि गुरुक आश्रममे रहिकेँ शिक्षा ग्रहण करैत छलाह।

**2. शैक्षिक वाद–विवाद परिषद्** दोसर प्रकारक शिक्षण-संस्था छल। एहि परिषदमे शिक्षाक गूढ़ विषय पर विद्वान् लोकनिक बीच वाद-विवाद होइत छल।

**3. सभा–** एहिमे भिन्न-भिन्न जनपदक विद्वान् लोकनि उपस्थित होइत छलाह आओर सत्य, आत्मा, ज्ञान, मोक्ष आदि दार्शनिक विषय पर शास्त्रार्थ होइत छल। शास्त्रार्थमे विजेता विद्वान्केँ राजा द्वारा पुरस्कृत कयल जाइत छल।

मिथिलाक राजा जनक आओर ऋषि याज्ञवल्क्यक ज्ञान-विज्ञानक प्रकाशसँ सम्पूर्ण आर्यावर्त आलोकित छल। विश्वक प्रथम दार्शनिक सम्मेलन मिथिलाक राजा जनकक दरबारमे भेल छल। ओहि सम्मेलनमे ऋषि याज्ञवल्क्य शास्त्रार्थमे विदेशागत विद्वान् सभकेँ पराजित कऽ राजा द्वारा पुरस्कृत भेलाह आओर जनक-राजवंशक कुल-गुरु घोषित भेलाह।

उपनिषद कालमे मिथिला शिक्षा एवं संस्कृतिक केन्द्र छल। ओहि समयमे वैदिक साहित्यक सङ्ग, षड् दर्शनक विकास चरमोत्कर्ष पर छल। छओ दर्शनमे चारि दर्शन न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आओर सांख्य दर्शनक जन्म गौतम, कणाद,

जैमिनी आओर कपिल मुनि द्वारा मिथिलामे 1000 ईसापूर्व सँ 600 ईसापूर्वक बीच भेल छल ।

यूनानी राजदूत मेगास्थनीज 300 ईसापूर्वमे भारत आयल छलाह । ओ मिथिलाक शैक्षिक-परम्परा आओर दर्शनक भूरि-भूरि प्रशंसा कयने छथि ।

मिथिलामे गौतमक पश्चात् प्रमुख नैयायिक वात्स्यायन एवं उद्योतकर भेलाह । ८म शताब्दीसँ पहिनहि मिथिलाक दक्षिण भागमे बौद्ध धर्मक प्रचार-प्रसार भऽ चुकल छल । पं. वाचस्पति मिश्र एवं उदयनाचार्य अपन कुशाग्र बुद्धिक बलेँ बौद्ध-लोकनिक सनातन-विरोधी एवं आक्रामक तर्ककेँ खंडित कऽ प्राचीन न्याय-दर्शनक सिद्धान्तकेँ स्थापित कयलनि । वैशालीमे बौद्ध-धर्मावलम्बीक गढ़केँ खंडित कऽ सनातन धर्मकेँ पुनर्स्थापित करबामे मिथिलाक सपूत कुमारिल भट्टक विशिष्ट शैक्षिक योगदान रहल अछि ।

एकर पश्चात् मिथिलाक प्रमुख मीमांसक मंडनमिश्रक नाम अबैत अछि जिनका संग शंकराचार्यक शास्त्रार्थ चर्चित अछि ।

कर्णाट एवं ओइनवार वंशक शासनावधिमे संस्कृत एवं पारम्परिक शिक्षाकेँ पूर्ण प्रश्रय भेटलैक तथा सकारात्मक प्रगति प्राप्त कयलक । एहि कालमे स्मृतिक अध्ययन पर बेस ध्यान देल गेल । एहि कार्यमे चण्डेश्वर, श्रीदत्तोपाध्याय, इन्द्रपति, लक्ष्मीपति आदि विद्वान्क महत्त्वपूर्ण योगदानक उल्लेख इतिहासकार लोकनि कयलनि अछि । ओइनवारक शासनकालमे मिथिलामे मीमांसाक अध्ययनमे अपूर्व प्रगति भेलैक । पद्मसिंहक पटरानी विद्वत्सभा आयोजित कऽ चौदह सय मीमांसककेँ आमंत्रित कयने छलीह । मिथिलाक मीमांसकमे भट्ट आ प्रभाकर दूटा सम्प्रदायक प्रचलनक सूचना भेटैत अछि जाहिमे प्रभाकर मिश्रक शाखा बेसी ख्यात छल । मिथिलामे गंगेश, वर्धमान, पक्षधर तथा अन्य विद्वान् लोकनिक अवदानक कारणेँ नव्यन्याय नामक एक विशिष्ट शैक्षिक परम्परा विकसित भेल जे आनो प्रदेशक शिक्षार्थी लोकनिकेँ विद्या-प्राप्तिक लेल आकर्षित करैत रहल ।

एहि अवधिमे मिथिलामे ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, गोविन्द दास आओर उमापति सदृश विद्वान लोकनिक आविर्भाव भेल । ई लोकनि संस्कृतक संग-संग मैथिली भाषामे स्वतंत्र आओर उत्कृष्ट ग्रन्थ सभक रचना कयलनि ।

नव्य न्याय पद्धतिक जन्मदाता गंगेश उपाध्याय (1093-1150) क आविर्भाव मङरौनी गाममे भेल । हिनक रचना "तत्त्व चिन्तामणि" पश्चात्वर्ती विद्वान् लोकनिकेँ कतेको शताब्दी धरि प्रभावित करैत रहल ।

नालन्दा आओर विक्रमशिला विश्वविद्यालयक ध्वस्त भेलाक बाद मिथिला शिक्षाक प्रमुख केन्द्र भऽ गेल । एहि ठामक शिक्षण-व्यवस्था सम्पूर्ण देशमे चर्चित छल । मिथिलाक विश्वविद्यालयमे स्नातक आओर शिक्षा समाप्तिक लेल विशिष्ट परीक्षाक आयोजन होइत छल जकरा 'शलाका' परीक्षा कहल जाइत छल । एहि परीक्षामे छात्रक प्रतिभाक परीक्षण सम्यक् रूपसँ होइत छल ।

मिथिला विद्यापीठक आचार्य लोकनिक उपाधि जेना- उपाध्याय, महोपाध्याय, महामहोपाध्याय क्रमशः हुनकर विद्वत्ता, प्रवीणता एवं वरीयताक आधार पर देल जाइत छल ।

मिथिलामे 'पद्मनाभदत्त' द्वारा एकटा विशिष्ट संस्था 'व्याकरण-विद्यालय'क स्थापना कयल गेल जाहिमे साहित्य, विज्ञान, तर्कशास्त्र, मीमांसा, ज्योतिष, स्मृति आओर धर्मशास्त्रक अध्ययन-अध्यापन होइत छल ।

मिथिलामे अनेको गामक नामकरण ओहिठाम प्रचलित वेद-वेदांग एवं शास्त्रक विशिष्ट अध्ययन-अध्यापनक आधार पर भेल अछि । 'रीगा', 'यजुआर', 'अथरी' आ सामरिमे क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्वेद आ सामवेदक अध्ययनक केन्द्र छल । मधुबनी जिलाक 'भट्सिम्मरि'मे भट्ट पद्धतिक मीमांसा तथा 'मऊबेहट'मे यजुर्वेदक माध्यन्दिनीशाखाक केन्द्र छल ।

मधुबनी जिलाक लोहना गाम संस्कृत विद्याक केन्द्र छल । विक्रमशिला विश्वविद्यालयक पतनोपरान्त लोहना विश्वविद्यालयक रूप धारण कयलक । एहि

ठाम दूर-दूरसँ शिक्षार्थी-लोकनि आबि विद्योपार्जन करैत छलाह । खंडवालावंशीय शासकक समय (16म शताब्दी सँ 19म शताब्दी)मे लोहना विश्वविद्यालयक विकास चरमोत्कर्ष पर छल ।

1860 ई.मे महाराजा महेश्वर सिंहक निधनक पश्चात् दुनू कुमार (लक्ष्मीश्वर सिंह आओर रमेश्वर सिंह)क नेना होयबाक कारणेँ मिथिलाक शासन अंग्रेज (कोर्ट्स ऑफ वार्ड्स)क अधीन भऽ गेल । अंग्रेज लोकनि मिथिलाक सामाजिक जड़ताकेँ दूर करबाक हेतु एहिठाम अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार आवश्यक बुझलनि । नाबालिग कुमार लोकनिक शिक्षाक लेल कोर्ट्स ऑफ वार्ड्स द्वारा दरभंगामे एकटा एंग्लो-भर्नाकुलर स्कूल 1861 ई.मे खोलल गेल जे किछु वर्षक बाद 'राज स्कूल'क रूपमे परिणत भेल । बादमे दुनू कुमारकेँ मुजफ्फरपुर आओर काशीमे राखि अंग्रेजी शिक्षा देल गेल । कुमार लोकनिक अंग्रेजी शिक्षासँ प्रभावित भऽ 1888 ई.मे विन्ध्यनाथ झा अंग्रेजी शिक्षा सँ बी.ए. कयलनि आओर गंगानाथ झा उच्चतम शिक्षा प्राप्त कयलनि । 1879 ई.मे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह दरभंगाक गद्दी पर बैसलाह । ओकर बाद दरभंगा राज स्कूलक स्तरोन्नयन, नौकरीक हेतु प्रतियोगिता मूलक परीक्षाक आयोजन, सिरिस्ताक भाषा मैथिलीसँ हिन्दी आओर हिन्दीमे विज्ञान सहित विभिन्न विषयक लेखक हेतु पारितोषिकक घोषणा कयल गेल । ओहि अवधिमे मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसारक लेल भर्नाकुलर स्कूल सभक स्थापना भेल । आधुनिक कालमे मिथिलाक शैक्षणिक परम्परामे योगदान देनिहारमे राँटी ड्योढ़ी (मधुबनी)क बाबू चन्द्रधारी सिंह एवं मधुबनीक बाबू रामकृष्ण पूर्वेक नाम उल्लेखनीय अछि । दरभंगाक चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय आ मधुबनीक रामकृष्ण कॉलेज एहि दुनू विभूतिक क्रमशः देन थिक । एहि दुनू महाविद्यालयक स्थापना मिथिलांचलक मेधावी छात्र-छात्रा लोकनिक लेल वरदान सिद्ध भेल । स्व० ललित नारायण मिश्रक सत्प्रयाससँ

मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना एहिठामक शैक्षणिक परम्पराकेँ समृद्ध करबामे विशेष योगदान प्रदान कयलक ।

आइ मिथिलाक घर-घरमे स्नातक, गाम-गाममे शैक्षिक-संस्था, सहस्रो प्रशासनिक पदाधिकारी, प्राध्यापक, डॉक्टर, इञ्जीनियर, वकील आओर शिक्षाक लेल समर्पित छात्र लोकनिकेँ देखि एहिठामक समृद्ध शैक्षणिक परम्पराक अन्दाज लगाओल जा सकैछ । तथापि बाह्य रूपेँ मिथिलाञ्चलक कुल साक्षरता दर कोनहु सभ्य समाजक तुलनामे भनहि समृद्ध बुझि पड़य मुदा एखनहु धरि प्रयोजन अछि शिक्षाकेँ जन-जन धरि पहुँचयबाक, सुदूर गामक दलित वर्गक नेना-भुटका तथा ललना लोकनिकेँ शिक्षित करबाक । तखनहि हमरा लोकनि अपन गौरवशाली परम्पराक रक्षा कऽ सकब जतय एकटा घसबाह पर्यन्त संस्कृतक निष्णात होइत छलाह ।

◆◆◆

## प्रश्न ओ अभ्यास

1. वैदिक-युगमे मिथिलामे शिक्षाक की व्यवस्था छल ?
2. विश्वक प्रथम दार्शनिक सम्मेलन कतय भेल आओर शास्त्रार्थमे के विजयी भेलाह ?
3. मिथिलामे कोन चारि-दर्शनक जन्म भेल ?चारूक जन्मदाताक नाम लिखू ।
4. यूनानी राजदूत मेगास्थनीज कोन समयमे भारत आयल छलाह आओर मिथिलाक शिक्षा आओर दर्शनक विषयमे हुनकर की सोच छलनि ?